



**AGRICULTURE UNIVERSITY,
JODHPUR**
JODHPUR 342304, Rajasthan, India
कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
जोधपुर 342304, राजस्थान, भारत

Telefax
0291 2570710(O)
0291-2570711
E-mail:
vcunivag@gmail.com

डॉ एम एल मेहरिया
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी

दिनांक – 02.02.2019

प्रेस-नोट

सब्जियों के उत्पादन एवं गुणवत्ता सुधार पर हुआ मंथन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर पर आयोजित तीन दिवसीय प्रथम सब्जी विज्ञान कांग्रेस के दूसरे दिन देश के विभिन्न भागों से आए हुए वैज्ञानिकों ने सब्जियों के उत्पादन, गुणवत्ता सुधार एवं संरक्षण विषयों पर मंथन किया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में सब्जियों के आनुवांशिक सुधार पर, नवाचार एवं संकर किस्मों के विकास पर अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इसी सत्र में सब्जियों के गुणवत्ता विकास में आनुवांशिकता का महत्व, बीज रहित बैंगन उत्पादन, भिंडी में लगने वाले विषाणु के नियंत्रण, सब्जियों में अधिक तापमान सहन करने वाली किस्मों के विकास, मिर्च की फसल में विषाणुरोधिता के विकास हेतु जंगली किस्मों के जीन के उपयोग एवं मटर की फसल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु किये गये अनुसंधानों हेतु अलग-अलग शोध-पत्र पढ़े। इसी सत्र के दौरान डॉ. बी. चौधरी स्मृति व्याख्यान डॉ. टी.ए. मौरे पूर्व कुलपति एम.पी.के.वी. राहूरी द्वारा दिया गया। कांग्रेस के दूसरे सत्र में जैव तकनीकी के नवाचार एवं उपयोग विषय पर व्याख्यान एवं शोध-पत्रों का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. ए.के. सिंह उप महानिदेशक, बागवानी, अधिष्ठाता बी.सी.के.वी. पश्चिमी बंगाल ने अध्यक्षता की। इस सत्र में टमाटर में पत्ती मोडक विषाणु के नियंत्रण एवं आर.एन.ए.आई तकनीकी द्वारा सब्जियों में विषाणु नियंत्रण पर शोध-पत्र पढ़े। इसी सत्र में इसके अतिरिक्त खरबूजे की फसल में लगने वाले फ्यूजेरियम विल्ट के विरुद्ध नई प्रजातियों पर एवं फलों की गुणवत्ता सुधार एवं उत्पादन बढ़ाने, केस-9 द्वारा जीनोम में फेरबदल तकनीकी से टमाटर की फसल में लगने वाले विषाणु के प्रति प्रतिरोधकता विकास, खरबूजे में नर बंधिता द्वारा नई किस्मों के विकास, सी-4 जीन द्वारा टमाटर की फसल में विषाणुरोधिता एवं खीरे की फसल में संकरण द्वारा फसल सुधार विषय के शोध-पत्र पढ़े गये।

सब्जी विज्ञान कांग्रेस के तृतीय सत्र में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति डॉ. बलराज सिंह ने पश्चिमी राजस्थान में संरक्षित खेती की संभावनाओं पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि भारत और चीन दोनों देशों ने लगभग एक साथ संरक्षित कृषि प्रारंभ की थी जो चीन में 3.5 मिलियन हैक्टेयर में फैल चुकी है जबकि भारत में मात्र 0.13 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र में खेती की जा रही है। जिसका मुख्य कारण इस तकनीकी का उचित प्रचार-प्रसार एवं उत्तरी भारत के लिए संरचनाओं की आकृति का उचित नहीं होना है। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि राजस्थान के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में पारिस्थितिकी असंतुलन, पर्यावरणीय आर्द्रता खिंचवा, कमजोर मृदा, सिंचाई जल की कमी एवं कीट और विषाणुओं के प्रकोप को देखते हुए इस क्षेत्र में छाया गृह, वाकिंग टनल, प्लास्टिक लो टनल, कीटरोधी गृह, प्लास्टिक मल्व एवं ड्रिप सिंचाई पद्धति अपनाने की भारी संभावनाएं हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थान के पश्चिमी

क्षेत्रों में ग्रीष्म काल में तापमान अधिक हो जाने के कारण काले रंग की ड्रिप सिंचाई तंत्र में पानी अधिक गर्म हो जाता है जिसके स्थान पर सफेद रंग की ड्रिप सिंचाई पद्धति अपनाने से इस समस्या का निराकरण किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार को सफेद रंग की ड्रिप सिंचाई पद्धति पर भी कृषकों को अनुदान देना चाहिए। डॉ. सिंह ने कृषकों द्वारा मिर्च एवं नागौरी मैथी के सूखाने की परम्परागत तकनीकी की खामियों के कारण उसमें विकसित होने वाले एपलाटोक्सीन का विकास हो जाता है जिसे रोकने के लिए उन्होंने हाई टनल का उपयोग करने की बात कही। इस पद्धति से सुखाए गए उत्पादों की गुणवत्ता, रंग, स्वाद आदि में सुधार होता है। उन्होंने इस क्षेत्र में छाया गृह में पत्ती वाली सब्जियों एवं कीटरोधी गृहों में टमाटर, खीरा, मिर्च, भिंडी, बैंगन आदि को पूरे वर्ष उगाने की बात कही। डॉ. सिंह ने बताया कि लो-टनल तकनीकी का विकास जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में किया गया था जो आज पंजाब, राजस्थान, हरियाणा में लगभग 50 हजार एकड़ में फैल चुकी है। जिससे कृषक बेमौसम सब्जियों का उत्पादन कर अधिक लाभ कमा रहे हैं। उन्होंने ड्रिप सिंचाई पद्धति के साथ-साथ छोटे कृषकों को कम दाब सिंचाई पद्धति अपनाने की बात भी कही। कार्यक्रम के दौरान पद्म श्री डॉ. ब्रह्म सिंह ने मृदा रहित खेती करने की संभावनाओं पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए बताया कि जिन क्षेत्रों में मृदा कृषि योग्य नहीं है वहाँ पर भी इस प्रकार की कृषि संभव है। डॉ. टी. जानकी राम सहायक महानिदेशक, बागवानी ने शहरी एवं उप-शहरी क्षेत्रों में लोगों की पोषण सुरक्षा हेतु अपनाए जाने वाली गृह-वाटिका एवं छत-वाटिका पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कांग्रेस के चतुर्थ सत्र में सब्जियों के नाशी जीव प्रबंधन पर रखा गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ. के.वी. पीटर, पूर्व कुलपति, केरला विश्वविद्यालय, त्रिचूर ने किया। इस सत्र के दौरान डॉ. ए.बी. रॉय ने नाशी जीव कीटों द्वारा सब्जियों में होने वाले नुकसान पर मुख्य व्याख्यान दिया। इनके अतिरिक्त डॉ. नगेन्द्र कौर, डॉ. मंजू नाथ, डॉ. जयदीप हलदर एवं डॉ. एस.एस. भाटी ने शोध-पत्र पढ़े।

उप महानिदेशक, बागवानी ने जताई चिंता :-

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक, बागवानी, डॉ. ए.के. सिंह ने टमाटर की फसल पर शोध कर रहे वैज्ञानिकों का आह्वान करते हुए कहा कि वर्तमान में हमारा देश ढाई से तीन हजार करोड़ रूपये के टमाटर के परिरक्षित उत्पाद (प्युरी) आयात करता है। जबकि हमारा किसान अपनी फसल का उचित दाम प्राप्त नहीं कर पाता है जिसका कारण यहाँ पाई जाने वाली किस्मों में लाइकोपिन एवं कुल घूलनशील ठोस पदार्थों की मात्रा की कमी है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को इस विषय पर अतिशीघ्र शोध करके किसानों को प्रसंसकरण योग्य किस्म उपलब्ध करवाने की बात कही।

(एम एल मेहरिया)



कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
Agriculture University, Jodhpur

Structures used for protected cultivation of vegetables

- | Greenhouses | Net Houses |
|--|---|
| <ul style="list-style-type: none">Climate controlledMoisture controlledLight controlHigh humidity | <ul style="list-style-type: none">Temperature controlledLight controlHigh humidityLow humidity |
| Other Temporary structures | |
| <ul style="list-style-type: none">Walk-in tunnelsPlastic low tunnelsPlastic mulchMicroclimate plastic walls | |

Emerging

SS
Education

Agriculture University
Jodhpur



1st Vegetable Science Congress
Addressing Challenges in Vegetable Research and Education
(VEGCON-2019)
February 1-3, 2019

SIDA

Agri. University, Kullu, Himachal Pradesh

Agri. University, Kullu, Himachal Pradesh

Agri. University, Kullu, Himachal Pradesh





1st
Emerging

SS
Education

anasi